

पार्श्वाल्य दर्शन में काण्ट ने नैतिक प्रमाण  
को प्रमुखता के साथ स्वीकार किया है। काण्ट  
ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि सम्बंधी परम्परागत प्रमाणों  
को खंडन करते हैं। काण्ट अपनी पुस्तक

क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन में यह कहते हैं कि  
गूड विले के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को  
सिद्ध नहीं किया जा सकता परंतु अपने क्रिटिक ऑफ  
प्रेम्सीकल रीजन में काण्ट व्यवहारिक कुहे की मांग  
के मनुष्य नैतिकता की पूर्वमस्यता के रूप में  
ईश्वर के अस्तित्व को आस्था के आधार पर स्वीकार  
कर लेते हैं। काण्ट के अनुसार "तारागाओं से आच्छादित  
आकाश पर और हृदय परल पर लिखे गये नैतिक  
आदेशों पर ध्यान देने से ईश्वर की अनुभूति हमें भाव  
विभोर कर देती है" यहाँ नैतिकता आंतरिक व्यवस्था  
की इंगित करती है।

काण्ट निरपेक्ष नियम, निरपेक्ष नैतिक आदेश  
एवं कर्म नियम में विकास करते हैं। काण्ट के  
अनुसार नैतिक आदेशों को शुभ संकल्प के द्वारा ही  
सम्पादित किया जा सकता है। शुभ संकल्प से शुभ  
व्यक्ति को उनके शुभ आचरण के अनुपात में फल  
की प्राप्ति होनी चाहिए क्योंकि नैतिकता के  
दृष्टिकोण से यह आवश्यक है। शुभ संकल्प के  
साथ सुख (happy ness) का समावेश पूर्ण सुख की  
स्थिति में होता है। पूर्ण शुभ सदगुण (virtue) एवं  
सुख (happy ness) के समन्वय की मांग करता है।  
व्यवहारिक कुहे की यह मांग है कि सदगुण के साथ  
सुख का समावेश अवश्य होना चाहिए परंतु सदगुण  
के साथ सुख का समन्वय अपने आप नहीं हो सकता।



- इनमे विषमता है

- यह मनुष्य के द्वारा भी सम्पादित नहीं हो सका  
स्योंकि मनुष्य को सुख प्राप्त को ध्यान में  
रखे बिना ही कर्म करना पड़ता है। अतः इन दोनो  
का समन्वय कोई ऐसी सर्वोत्कृष्ट सत्ता ही  
कर सकती है जो शुभ-सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान  
हो यही सत्ता ईश्वर है। इस प्रकार यहाँ ईश्वर  
की सत्ता को सद्गुण के साथ सुख के समन्वय  
- कर्त्ता के रूप में स्वीकार किया गया है यहाँ ईश्वर  
नैतिक न्यायधीश की भूमिका में है।

काण्ट के अनुसार यदि हम ईश्वर की सत्ता  
को स्वीकार करें व यह मानें कि नैतिक  
कर्त्तव्य ईश्वर की आज्ञा है तो फिर इससे कर्त्तव्य  
पालन में प्रेरणा मिलती है। यहाँ यह उल्लेखनीय  
है कि काण्ट के अनुसार नैतिक स्वतन्त्रता (autonomy)  
आत्म आरोपित है नैतिकता वास्तव में self imposed  
में ईश्वरीय आदेश नहीं है। पुनः नैतिकता किसी  
बाह्य परिणाम पर निर्भर नहीं है। यहाँ केवल व्यवहार  
दृष्टिकोण से कर्त्तव्यों के सरलतापूर्वक पालन के  
दृष्टिकोण से ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नैतिकता  
को ईश्वरीय आदेश के रूप में स्वीकार किया गया है।  
यहाँ ईश्वर को नैतिक कर्मों के सम्पादन हेतु मानवीय  
वैज्ञानिक उत्प्रेरक (Sociological basis) के रूप में  
स्वीकार किया गया है।

काण्ट के बाद रैसनेल न्यूमैन इत्यादि  
विचारकों का यह मानना है कि यदि नैतिक नियमों  
एवं मूल्यों की वस्तुनिष्ठता की लक्ष्यक रूपेण  
प्राप्ति करनी है तो फिर इसके लिये ईश्वर की



का ए का नैतिक प्रमाण ईश्वर को नैतिकता  
के साधन के रूप में स्वीकार करता है। यहाँ  
नैतिकता साध्य है व ईश्वर साधन के  
धार्मिक दृष्टिकोण से इसे स्वीकार नहीं किया जा  
सकता।

3. मानववादीयों के अनुसार नैतिक मूल्यों की उत्पत्ति  
एनै ल्वरूप की विरुद्ध प्रकृतिवादी व्याख्या की जा  
सकती है इसके लिये किसी अलौकिक सत्ता को  
मानने की कोई आवश्यकता नहीं है।
4. जैन व बौद्ध धर्म में नैतिकता की बात की गई  
परंतु यहाँ इसकी व्याख्या करने के लिये किसी  
ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है।
5. बौद्ध सद्गुण व सुख को जोड़ने की बात  
करते हैं परंतु दो परस्पर विरोधी तत्वों को  
एक साथ जोड़ नहीं जा सकता।

महत्व यह प्रमाण एक ऐसे ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करता है  
जो भक्ति व उपासना की दृष्टि से अनुकूल है। इस  
रूप में यह प्रमाण अन्य प्रमाणों के लिये बलवत्  
काम करता है।